भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और गुजराती भक्त कवि नरसिंह मेहता

सावन कुमार

भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से शुरू होकर संपूर्ण भारत में फैला। सगुण.निर्गुण, शैव.वैष्णव, राम. कृष्ण के विवाद के बीच भक्ति की परंपरा किसी नकिसी रूप में देश भर में फैली। उत्तर भारत में मजबूती से फैले इस आंदोलन के साथ महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम और रामदास जैसे संत जुड़े। बंगाल में चंडीदास और चैतन्य महाप्रभु तथा पंजाब में गुरु गोविंद सिंह ने भक्ति काव्य की परंपरा को मजबूत किया। गुजराती साहित्य में नरसिंह मेहता का नाम भी इस क्रम में शामिल किया जाता है। कृष्ण भक्ति परंपरा को मजबूती देने में विद्यापति, महाप्रभु चैतन्य, वल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, निंबार्काचार्य, हितहरिवंश और स्वामी हरिदास के नाम अग्रणी हैं। नरसिंह मेहता ने अन्य कृष्ण भक्त कवियों की तरह शुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद जैसी दार्शनिक जटिलता से भरसक बचकर सहज प्रेम और प्रपत्ति पर ही अपना ध्यान केंद्रित रखा।